

मृदा (मिट्टी)

मृदा (Soil) : मृदा भूमि की ऊपर पाई जाने वाली दानेदार परत है जिसका निर्माण मूलरूप से चट्टानों विखण्डित होने उनमें वनस्पति व जीवों के सड़ने, गलने तथा जलवायु की क्रिया में निर्मित अम्लीय पदार्थों से लाखों वर्षों की प्रक्रिया के बाद मृदा का रूप लेती है। इसका निर्माण चट्टानों के घिसावट से होता है जिसमें अत्यधिक समय लगता है मिट्टी के अध्ययन विज्ञान को **मृदा विज्ञान (Pedology)** जोन कहते हैं। मिट्टी कि पांच परत होती है। इन पांचों परतों को मिलाने पर मृदा परिच्छेद यास्वान Profile बनता है।

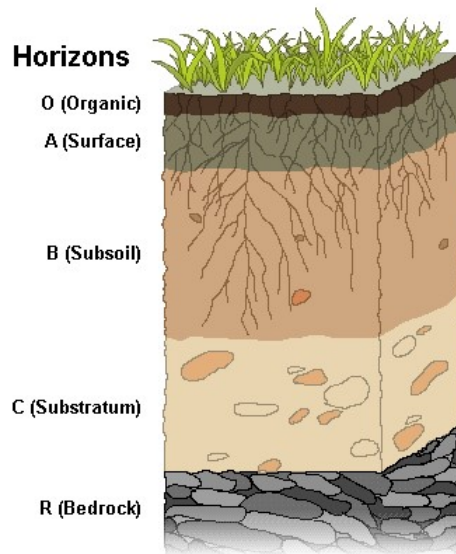
होरिजोन 0 → इसे ह्यूमस कहत हैं यह मिट्टी का सबसे ऊपरी भाग होता है इसमें सर्वाधिक मात्रा में कार्बनिक पदार्थ तथा खाद्य पाये जाते हैं। यह जंगलों की मृदा में अधिक होता है।

Horizone A → इसे ऊपरी मृदा कहते हैं छोटे पौधे का जड़ होरिजोन A तक ही जाता है यह बहुत ही उपजाऊ होती है। इसमें किड़े-मकोड़े और चूहे रहते हैं।

Horizone B → बड़े पेड़ पौधों के जड़ होरिजोन B तक ही जाते हैं।

Horizone C → जो खेतों के लिए अच्छी नहीं है।

Horizone R → यहाँ केवल पत्थर पाये जाते हैं।



भूगोल के अनुसार मिट्टी के प्रकार

भूगोल के अनुसार मिट्टी को दो भागों में बाँटते हैं स्थानवद्ध मिट्टी तथा स्थानांतरि मिट्टी।

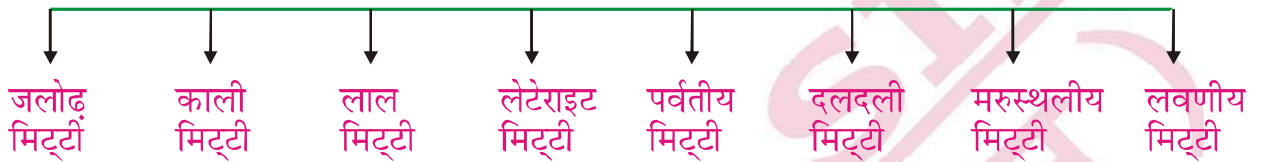
स्थानवद्ध मिट्टी :- वैसी मिट्टी जो अपने बनने वाले स्थान पर ही रूकी रहती है उसे स्थानवद्ध मिट्टी कहते हैं।

जैसे-काली, लाल, लेटेराइट

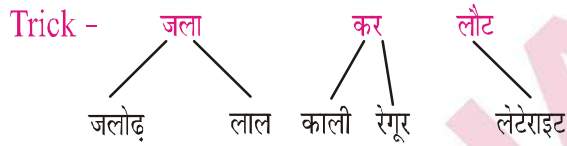
स्थानांतरि मिट्टी :- वैसी मिट्टी जो अपने बनने वाले स्थान को छोड़कर वायू या जल के द्वारा दूसरे स्थान पर चली जाती है उसे स्थानांतरि मिट्टी कहते हैं। जैसे-जलोढ़ मिट्टी।

Indian Council for agriculture Research (ICAR) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने भारत की मिट्टी को आठ भागों में विभाजित किया है।

भारत की मिट्टियाँ



भारत में सर्वाधिक जलोढ़ मिट्टी पाई जाती है।



1. जलोढ़ मिट्टी :- इसे दोमट मिट्टी और कछारी मिट्टी कहते हैं। जलोढ़ मिट्टी नदियों द्वारा पहाड़ी क्षेत्र से लाकर मैदानी क्षेत्रों में बिछा दी जाती है। जलोढ़ मिट्टी भारत में पाये जाने वाली सर्वाधिक उपजाऊ मिट्टी है। यह 43% क्षेत्र पर पायी जाती है ये नदी वाले क्षेत्र में देखी जाती है इसका विस्तार उत्तर भारत में है जब जलोढ़ में बहुत कम मात्रा में बालू हो तो उसे कॉप कहते हैं जब जलोढ़ में अधिक मात्रा में बालू मिल जाता है। तो उसे दोमट कहते हैं। ये मिट्टी धान की खेती के लिए काफी अच्छी मानी जाती है तथा साथ ही गेहूँ, मक्का, तेलहन, आलू की खेती की जाती है।

क्षेत्र : भारत का सम्पूर्ण उत्तरी मैदान और तटीय मैदान

प्रचुरता : चूना पत्थर तथा पोटेशियम प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

कमी : नाइट्रोजन, फास्फोरस तथा ह्यूमस की कमी है।

2. काली मिट्टी :- इसका निर्माण बेसाल्ट चट्टानों के टूटने फूटने से होता है। इसे लावा निर्मित मिट्टी कहते हैं। इसमें सर्वाधिक मात्रा में ह्यूमस होता है यह मिट्टी सबसे ज्यादा जल सोखती है। काली मिट्टी को रेगुर मिट्टी, कपास की मिट्टी और लावा मिट्टी भी कहते हैं। इस मिट्टी का काला रंग 'टिटेनीफेरस मैग्नेटाइट' की उपस्थिति के कारण होता है। यह कपास तथा गन्ना के उत्पादन के लिए अच्छी है यह 13% क्षेत्र पर पाया जाता है।

क्षेत्र : मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तरी कर्नाटक

प्रायद्वीपीय भारत में काली मिट्टी सबसे ज्यादा पायी जाती है। काली मिट्टी का सबसे ज्यादा विस्तार महाराष्ट्र में देखने को मिलता है।